सेन्ट्रल जोन इंश्योरेन्स एम्पलाईज एसोसियेशन

(ए.आई.आई.ई.ए. से सम्बद्ध)

प्रभांजलि, 33, आर.डी.ए. कालोनी, टिकरापारा, रायपुर (छ.ग.)

अध्यक्ष : का. एन. चक्रवर्ती | **परिपत्र क्र. : 02/2015**

महासचिव : का. बी. सान्याल | **दिनांक : 13.01.2015**

रहो न रहो महका करोगे - अलविदा कामरेड सुजीत

प्रिय साथियों,

11 जनवरी, 2015 की सुबह 9.30 बजे जब हम सबके प्यारे सदा मुस्कुराते आर.डी.आई.ई.यू. के महासचिव तथा सी.जेड.आई.ई.ए. के सहसचिव का. सुजीत शर्मा ने रायपुर के संजीवनी कैंसर हास्पिटल में अपनी अंतिम सांस ली तो हम सब सन्न रह गये। घातक ब्रेन कैंसर बीमारी के विरूद्ध का. सुजीत का बहादुराना संघर्ष इतना अल्पावधिक होगा, ऐसी आशंका किसी को भी नहीं थी। यह कल्पना मात्र से कि, हंसता हुआ वो नूरानी चेहरा हमारे सामने अब कभी भी नजर नहीं आयेगा, हमें अंदर से झकझोर देता है।

सदाबहार, मिलनसार, प्रखर वक्ता, कवि, लेखक, अभिनेता जैसे अनेक काबिलियत के धनी का. सुजीत शर्मा का जन्म 20 अक्टूबर, 1967 को दुर्ग जिले के कुम्हारी कस्बे में हुआ था। उनके पिता दिवंगत डॉ. ठाकुर प्रसाद शर्मा एक आयुर्वेदिक चिकित्सक थे तथा माता श्रीमती प्रभा देवी पुत्र शोक में शोकाकुल हैं। पांच भाई-बहनों में का. सुजीत तीसरे तथा उससे बड़े एक भाई का 1996 में निधन हो गया था जबकि उनके पिता का निधन 1995 में हो चुका था। बचपन से ही अन्याय एवं अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाना का. सुजीत के फितरत में शामिल था। पिता एवं एक भाई के असामयिक निधन के बाद पूरे परिवार की जिम्मेदारी उन पर आ गई और बड़े ही निष्ठा के साथ उन्होंने उनका निर्वाह भी किया। वे अपने पीछे पत्नि श्रीमती प्रतिमा शर्मा व दो पुत्र उत्तरार्ध 16 वर्ष एवं उद्देश्य 14 वर्ष को छोड़ गये हैं। वे सभी भी इस असामयिक घटना से शोकस्तब्ध हैं। सांगठनिक कार्यों को अंजाम देने में व्यस्तता के चलते परिवार को समय न दे पाने की स्थिति में भी उनके परिवार ने कभी का. सुजीत से शिकायत नहीं की। का. सुजीत के परिजनों का यह योगदान भी अविस्मरणीय रहेगा।

एक स्नातक के रूप में 13 जनवरी, 1992 को भारतीय जीवन बीमा निगम में टंकक के पद पर उनकी नियुक्ति सबसे पहले तत्कालीन रायपुर डिवीजन के कोरबा-1 में हुई जहां से धमतरी होते हुये 1994 में वे रायपुर शाखा-1 में पदस्थ हुये तथा बाद में मंडल कार्यालय में स्थानांतरित हुये। शुरू से ही ए.आई.आई.ई.ए.के विचारधारा ने उनको आकर्षित किया तथा उन्होंने मेहनतकशों के संघर्ष का हिस्सा बनते हुये आजीवन उसी राह पर चलते रहने का शपथ लिया। शुरूआती दौर में जनवादी नाटकों के मंचन तथा अभिनय करना उनके पसंदीदा कार्य थे लेकिन सांगठनिक नेतृत्व देने की क्षमता उनके अंदर शुरू से ही परिलक्षित हो रहा था और इसी प्रक्रिया में वे 1999 में रायपुर-1 के शाखा सचिव चुने गये और उसी वर्ष आर.डी.आई.ई.यू. के दंतेवाड़ा में सम्पन्न 27वें सम्मेलन में आर.डी.आई.ई.यू. के सहसचिव चुने गये। और सन् 2007 में मुंगेली में सम्पन्न आर.डी.आई.ई.यू. के 35वें सम्मेलन में महासचिव चुने गये। उसी वर्ष रायपुर में सम्पन्न सी.जेड.आई.ई.ए. के सप्तम अधिवेशन में वे सी.जेड.आई.ई.ए. के सहसचिव चुने गये। ए.आई.आई.ई.ए. के कानपुर अधिवेशन में वे ए.आई.आई.ई.ए. कार्यकारिणी समिति के सदस्य चुने गये। का. सुजीत संयुक्त ट्रेड यूनियन कौंसिल, रायपुर के सहसचिव के रूप में भी सितम्बर 2012 में चुने गये। उपरोक्त सभी पदों पर का. सुजीत जीवन के अंतिम दिनों तक कार्यरत रहे।

का. सुजीत के नेतृत्व में आर.डी.आई.ई.यू. ने सामूहिक नेतृत्व के विकास में एक नया आयाम तय किया। संगठन के विकास में उनका व्यक्तिगत योगदान निश्चित रूप से हमेशा ही बेदाग एवं सराहनीय रहा। विरले ही होते हैं वे लोग जो अपने व्यक्तिगत फायदे एवं आराम को सामूहिक हित के लिये हंसते-हंसते कुर्बान कर देते हैं। विरले ही होते हैं ऐसे लोग जो अपने से छोटों को भी आदर और सम्मान के साथ बुलाते हैं। विरले ही होते हैं ऐसे लोग जो मुश्किल से भी मुश्किल परिस्थिति में भी धीरज न खोकर संगठन के सिद्धांत के साथ बिना कोई समझौते किये लगातार संघर्ष के राह पर चलते रहते हैं। विरले ही होते हैं ऐसे लोग जो

अपने आवाज की बुलंदियों से सबको एक कतार पर लामबंद करने में निरन्तर सफल रहते हैं। विरले ही होते हैं ऐसे लोग जिनकी दोस्ती से लोगों को गौरवान्वित महसूस होता है। का. सुजीत इन्हीं विरले व्यक्तित्वों में से ही एक थे। उनका निधन केवल उनके परिवार के के लिये अपूरणीय क्षति नहीं है बल्कि छत्तीसगढ़ के वामपंथी जनवादी आन्दोलन के साथ-साथ सम्पूर्ण देश के बीमा कर्मचारियों के आन्दोलन के लिये भी एक बड़ा नुकसान है, जिसकी भरपाई बहुत ही कठिन है।

जैसे ही उनके निधन का दु:खद समाचार लोगों को मिला सभी लोग शोकाकुल हो गये और सबका रूख अपने आप सुन्दर नगर के उनके निवास स्थल की ओर हो गया। का. सुजीत हम सबके लिये क्या थे वो 11 जनवरी को उनके अंतिम यात्रा में उमड़े लोगों की भीड़ से ही सुस्पष्ट था जबकि ऐसे भी बहुत लोग होंगे जिन तक समय पर खबर भी शायद न पहुंची हो। शोकाकुल माहौल में का. सुजीत के अंतिम यात्रा में शामिल लोग सुबकते नजर आये। अर्द्ध झुके हुये लाल झण्डों के पीछे फूलों एवं लाल झण्डों से सज्जित वाहन में का. सुजीत की अंतिम यात्रा सुन्दर नगर से महादेव घाट तक 4 कि.मी. से अधिक का रास्ता तय करके शमशानघाट पहुंची। **इस दौरान चारों तरफ का. सुजीत अमर रहे, का. सुजीत को लाल सलाम, का. सुजीत के अरमानों को मंजिल तक पहुंचायेंगे जैसे नारों के साथ लाल झण्डा लेकर कामरेड आगे बढ़ते जायेंगे तुम नहीं रहे इसका गम है पर फिर भी लड़ते जायेंगे इस गाने को गाते हुये अंतिम यात्रा में शामिल महिला एवं पुरूष साथी आगे बढ़ रहे थे।** उनके अंतिम संस्कार के बाद इसी स्थान पर एक शोकसभा हुई जिसमें बड़ी संख्या में कर्मचारी, अधिकारी, बिरादराना संगठन तथा का. सुजीत के परिवारजन शामिल रहे और उन्हें दो मिनट की मौन श्रद्धांजलि भी दी गई।

आर.डी.आई.ई.यू., सी.जेड.आई.ई.ए. और ए.आई.आई.ई.ए. के लिये का. सुजीत का असामयिक निधन एक ऐसा गहरा धक्का है जिससे उबरने के लिये सभी को अनथक प्रयास करना पड़ेगा। ए.आई.आई.ई.ए. व सी.जेड.आई.ई.ए. का. सुजीत की स्मृति में अपना लाल झण्डा झुकाते हुये उनकी माता श्रीमती प्रभा देवी, पत्नि श्रीमती प्रतिमा, पुत्रद्वय उत्तरार्ध व उद्देश्य तथा शोकसंतप्त उनके समस्त परिजनों को देश भर के बीमा कर्मियों की ओर से गहन संवेदनायें प्रेषित करता है। इस दु:ख की घड़ी में हम सब का. सुजीत के परिवारजनों के साथ हैं।

हमारा संगठन एक निरन्तर आन्दोलन का नाम है। व्यक्ति का हमेशा के लिये चले जाना निश्चित ही संगठन के लिये कठिनाई पैदा करते हैं लेकिन तमाम चुनौतियों को स्वीकार करते हुये आगे बढ़ते रहने का नाम ही संगठन है, जिसके लिये का. सुजीत अंतिम क्षणों तक प्रतिबद्ध रहे। **अलविदा कामरेड, हम तुन्हें कभी नहीं भूलेंगे। फूलों से ढकी हुई तुम्हारी समाधि कहती है कि, तुम नहीं हो लेकिन, मन कहता है कि तुम हो, तुम यहीं कहीं हो।**

जिस सुबह का इंतजार का. सुजीत अंतिम सांस तक करते रहे उसी के बारे में साहिर लुधियानवी की चंद पंक्तियां उद्धृत कर हम का. सुजीत को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

वो सुबह कभी तो आयेगी, वो सुबह कभी तो आयेगी
इन काली सदियों के सर से, जब रात का आँचल ढलकेगा
जब दु:ख के बादल पिघलेंगे, जब सुख का सागर छलकेगा
जब अंबर झूम के नाचेगा, जब धरती नग्में गायेगी
वो सुबह कभी तो आयेगी

जिस सुबह की खातिर जुग जुग से, हम सब मर मर कर जीते हैं
जिस सुबह के अमृत की धून में, हम जहर के प्याले पीते हैं
इन भूखी प्यासी रूहों पर, एक दिन तो करम फर्मायेगी
वो सुबह कभी तो आयेगी

जब धरती करवट बदलेगी, जब कैद से कैदी छूटेंगे
जब पाप-घरोंदे फूटेंगे, जब जुल्म के बंधन टूटेंगे
उस सुबह को हम ही लाएंगे, वह सुबह हमी से आएगी
वह सुबह हमीं से आएगी
मनहूस समाजी ढांचों में जब जुर्म न पाले जाएंगे
जब हाथ न काटे जाएंगे जब सर न उछाले जाएंगे
जेलों के बिना जब दुनिया की सरकार चलाई जाएगी
वह सुबह हमीं से आएगी
संसार के सारे मेहनतकश, खेतों से मिलों से निकलेंगे
बेघर, बेदर, बेबस इन्सां, तारीक बिलों से निकलेंगे
दुनिया अमन और खुशहाली के फूलों से सजाई जाएगी
वह सुबह हमीं से आएगी।

का. सुजीत जैसे लोग मरा नहीं करते-का. सुजीत अमर रहे।

आपका साथी

(बी. सान्याल)
महासचिव

मुद्रक : एक्सेल ऑफसेट प्रिन्टर्स, फूल चौक, रायपुर (छ.ग.) दूरभाष : 0771-4053295